जयपुर जिले की चौमूँ तहसील में जनसंख्या प्रारूप एवं साक्षरता

डॉ माली राम वर्मा
व्याख्याता
भूगोल विभाग
सेठ आरएल सहरिया राजकीय पीजी महाविधालय कालाडेरा ,जयपुर

सारांश

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में जनसंख्या एक बहुआयामी घटना है। जनसंख्या की संरचना का अध्ययन करने के लिये बहुआयामी आगम की आवष्यकता होती है। यह एक ऐसी संरचना है, जिसमें व्यक्तियों पर सामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों का प्रभाव, गुणवत्ता के आधार पर उनके जीवन स्तर, सामाजिक परिवेष में उनकी सोच, मनोवैज्ञानिक दृष्टि से जनसंख्या की मनोदषा, आर्थिक मानक पर उनका जीवन स्तर एवं राजनैतिक पर्यावरण में जनसंख्या के द्वारा राज्य की स्थापना इत्यादि विभिन्न बिन्दू जनसंख्या के अन्तर्गत ही समाहित है। जनसंख्या का ढाँचा सदैव षिक्षा प्रणाली को प्रभावित करता है।

चौमू तहसील राजस्थान राज्य के पूर्वी भाग में विस्तृत जयपुर जिले में स्थित तहसील है। जयपुर जिले के मध्य–उत्तरी भाग में स्थित चौमू तहसील उत्तर में सीकर जिले के साथ जयपुर–सीकर जिले की सीमा का निर्माण करती है। सीकर जिले की श्रीमाधोपुर तहसील चौमू तहसील के उत्तर मे स्थित है। इस सीमा पर चौमू के किषनपुरा, सिरसा, नांगल–गोविन्द, खेजरोली आदि गांव अवस्थित हैं। चौमू तहसील के उत्तर पूर्व में जयपुर जिले की षाहपुरा तहसील स्थित है। चौमू तहसील के दक्षिण पूर्व भाग में आमेर तहसील स्थित है। इस सीमा पर चौमू तहसील के जाटावाली, चीथवाडी, अनन्तपुरा, जैतपुरा गांव स्थित हैं। चौमू के पष्चिमी भाग में जयपुर जिले की सांभर तहसील स्थित है।

चौमू तहसील में वर्ष 2001 में जनसंख्या 326488 थी जो वर्तमान में बढ़कर 395009 हो गयी। जो कि तहसील में असमान रूप से वितरित है। जनसंख्या वृद्धि दर 1991 में 33.4 प्रतिषत, 2001 में 29.1 प्रतिषत और 2011 में 30.8 प्रतिषत रही है जिसमें भी उतरोत्तर बदलाव दृष्टिगत है। षिक्षा की दृष्टि से चौमू तहसील में विगत दषक में क्रान्तिकारी परिवर्तन आये हैं। 2001 में जहां राजस्थान की साक्षरता 61.03 प्रतिषत थी, वहीं चौमू तहसील की 67.08 प्रतिषत थी लेकिन यह जयपुर की कुल साक्षरता 70.63 प्रतिषत से अभी भी कम ही थी।

ज्ञातव्य है कि ग्रामीण क्षेत्रों में विद्यालयों में आधारभूत बुनियादी सुविधाओं की अपर्याप्तता के कारण भी बालिका षिक्षा पर सवालिया निषान लग जाता है। निराषाजनक तथ्य यह है कि अधिकांष विद्यालयों तक पहुँचने के लिये गांवों में आज भी पक्की सड़कें व यातायात के साधन नही हैं। ऐसे में महिला षिक्षा तो दूर की बात, महिलाएं घर से बाहर भी नही निकल पाती है।

संकेत शब्द–*बहुआयामी, सामाजिक, सांस्कृतिक मूल्य, मनोवैज्ञानिक, जनसंख्या वृद्धि दर।*

प्रस्तावनाः

चौमू तहसील राजस्थान राज्य के पूर्वी भाग में विस्तृत जयपुर जिले में स्थित तहसील है। जयपुर जिले के मध्य–उत्तरी भाग में स्थित चौमू तहसील उत्तर में सीकर जिले के साथ जयपुर–सीकर जिले की सीमा का निर्माण करती है। सीकर जिले की श्रीमाधोपुर तहसील चौमू तहसील के उत्तर में स्थित है। इस सीमा पर चौमू के किषनपुरा, सिरसा, नांगल–गोविन्द, खेजरोली आदि गांव अवस्थित हैं। चौमू तहसील के उत्तर पूर्व में जयपुर जिले की षाहपुरा तहसील स्थित है। चौमू तहसील के दक्षिण पूर्व भाग में आमेर तहसील स्थित है। इस सीमा

पर चौमू तहसील के जाटावाली, चीथवाडी, अनन्तपुरा, जैतपुरा गांव स्थित हैं। चौमू के पष्चिमी भाग में जयपुर जिले की सांभर तहसील स्थित है। इस प्रकार जयपुर जिले में चौमू तहसील की स्थिति अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती है।

चौमू तहसील में 2001 में कुल जनसंख्या 3,26,488 थी तथा 2011 में जनसंख्या 3,95,009 हो गयी है। जिसका वितरण चौमू तहसील के सभी गांवों में समान नही है क्योंकि जनसंख्या वितरण पर उच्चावच, जलवायु, मिट्टी, धरातल, जलापूर्ति, आर्थिक संसाधन (परिवहन, खनिज), सामाजिक–सांस्कृतिक आदि कारक प्रभावित करते हैं। चौमू तहसील के पूर्वी, दक्षिणी तथा मध्यवर्ती भाग में जनसंख्या का अधिकतम भाग पाया जाता है। चौमू कस्बे में नगरीय सुविधाओं के कारण सघन जनसंख्या निवास करती है। पष्चिमी भाग में भू–जल स्तर का अधिक गहराई पर पाया जाना तथा कुल मात्रा में कमी, अर्द्धषुष्क जलवायु दषाओं का विस्तार मध्यम उपजाऊ बलुई मिट्टी आदि के कारण कम जनसंख्या पाई जाती है।

सारणी 1: चौमू तहसील में जनसंख्या वृद्धि (1991–2011)

वर्ष	वृद्धि दर (प्रतिषत में)
1991	33.45
2001	29.15
2011	30.8

स्त्रोतः जनगणना प्रतिवेदन, 1991,2001,2011, राजस्थान।

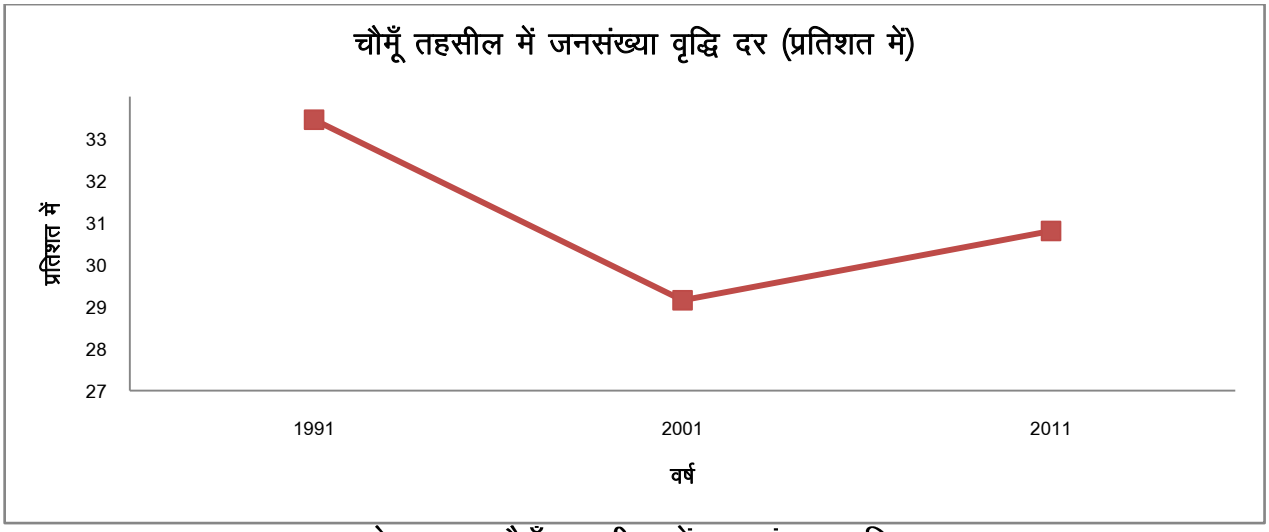

आरेख 1 : चौमूँ तहसील में जनसंख्या वृद्धि दर

शिक्षा–वर्तमान में षिक्षा एक आधारभूत सुविधा है जिसके द्वारा व्यक्ति का सर्वांगीण विकास होता है। जिस प्रकार मस्तिस्क के बिना जीवन नहीं उसी प्रकार षिक्षा के बिना षिक्षा के बिना व्यक्ति का वर्तमान युग में कोई महत्व नही है। षिक्षा की दृष्टि से चौमू तहसील में विगत दषक में क्रान्तिकारी परिवर्तन आये हैं। 2001 में जहां राजस्थान की साक्षरता 61.03 प्रतिषत थी, वहीं चौमू तहसील की 67.08 प्रतिषत थी लेकिन यह जयपुर की कुल साक्षरता 70.63 प्रतिषत से अभी भी कम ही थी।

सारणी 2 : चौमू तहसील में साक्षरता की स्थिति (2001)

	कुल साक्षरता			ग्रामीण साक्षरता			षहरी साक्षरता		
	पुरूष	महिला	कुल	पुरूष	महिला	कुल	पुरूष	महिला	कुल
जयपुर	83.58	56.18	70.63	79.96	44.42	62.96	87.03	67.89	78.09
चौमू	84.68	57.68	67.08	83.67	47.39	66.24	89.92	59.11	75.30

स्त्रोतः जनगणना प्रतिवेदन, 2001, राजस्थान।

ज्ञातव्य है कि ग्रामीण क्षेत्रों में विद्यालयों में आधारभूत बुनियादी सुविधाओं की अपर्याप्तता के कारण भी बालिका षिक्षा पर सवालिया निषान लग जाता है। निराषाजनक तथ्य यह है कि अधिकांष विद्यालयों तक पहुँचने के लिये गांवों में आज भी पक्की सड़कें व यातायात के साधन नही हैं। ऐसे में महिला षिक्षा तो दूर की बात, महिलाएं घर से बाहर भी नही निकल पाती हैं।

साक्षरता किसी भी सभ्य समाज के विकास का मापदण्ड है। साक्षर व्यक्तियों को सरकारी व गैर सरकारी संस्थाओं द्वारा संचालित विकास कार्यों की जानकारी अधिक होती है। समाज का यही वर्ग किसी भी कार्यक्रम के क्रियान्वयन में अपनी सहभागिता निभाता है। साक्षर व्यक्ति में किसी भी कार्यक्रम के सकारात्मक व नकारात्मक पहलूओं के मूंल्याकन करने की क्षमता अधिक होती है। साक्षरता जनसंख्या की गुणात्मक विशेषता है जो किसी क्षेत्र के सामाजिक व आर्थिक विकास का एक यथार्थ व विश्वसनीय सूचक है।

साक्षरता दर को प्रभावित करने वाले कारको में आर्थिक विकास का स्तर नगरीकरण, जीवन स्तर, महिलाओं की सामाजिक स्थिति, विभिन्न शैक्षणिक सुविधाओं की उपलब्धता तथा सरकारी नीतियाँ प्रमुख है। चौमूं तहसील में साक्षरता का अध्ययन यदि कृषि कार्य के संदर्भ में करे तो कृषि विकास एवं आधुनिकरण प्रक्रिया हेतु किसान का साक्षर होना आवष्यक हैं। षिक्षित किसान कृषि उत्पादन की नइ तकनीकियों को मषीनरी आदि के बारे में जानकारी विभिन्न संस्थाओं से प्राप्त करके आसानी से अपने व्यवसाय में अपना लेता है तथा अषिक्षित किसान पुरानी कृषि पद्धति एवं रूढिवादी विचारों के आधार पर ही कृषि कार्य करता है। अषिक्षित किसान कृषि को देवी–देवताओं का दान या उपकार मानते है। जबकि षिक्षित किसान इन विचारों से दूर रहते हुए कृषि में नई तकनीकियों एवं औजारों का प्रयोग करता हुआ कृषि उत्पादन में वृद्धि करता है। षिक्षित किसान साख सुविधाओं कृषि विपणन आदि सुविधाओं का भी अधिकतम लाभ प्राप्त करने की दिषा में हमेषा तत्पर रहता हैं।

सारणी 3 : चौमूं तहसील साक्षरता–वर्ष 2001–2011

क्षेत्र	साक्षरता प्रतिशत में					
	वर्ष 2001			वर्ष 2011		
	पुरूष	स्त्री	कुल	पुरूष	स्त्री	कुल
ग्रामीण	82.87	46.73	65.63	85.97	45.10	71.52
शहरी	87.96	57.46	73.51	90.21	67.74	79.39
कुल	83.69	48.43	66.81	86.76	58.24	72.97

स्रोत : कार्यालय जिला सांख्यिकी अधिकारी, जयपुर वर्ष 2001,2011

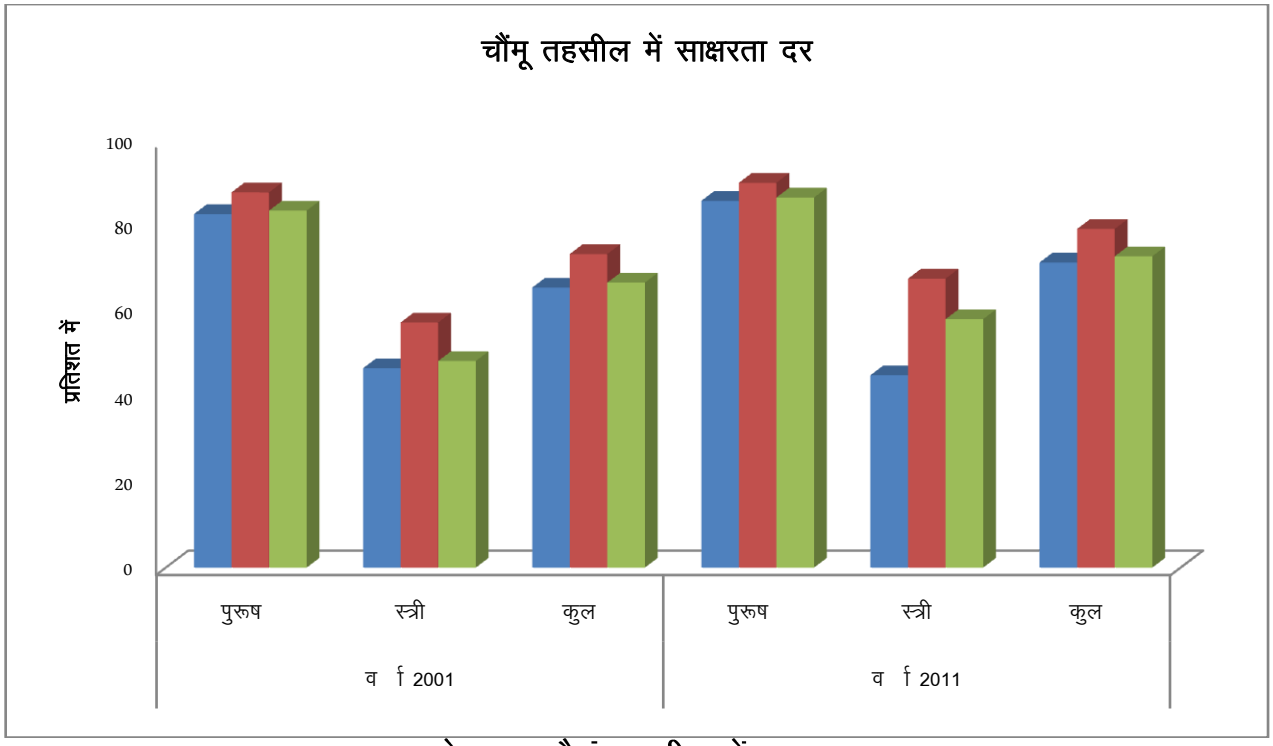

आरेख 2: चौमूं तहसील में साक्षरता दर

अध्ययन क्षेत्र चौमूं तहसील साक्षरता की दृष्टि से मध्यम स्थान रखता है। वर्ष 2001 की जनगणना के अनुसार साक्षरता मात्र 66.81 प्रतिषत थी। जिसमें ग्रामीण 65.63 प्रतिषत तथा शहरी 73.51 प्रतिषत थी। सन् 2011 में साक्षरता में काफी अधिक बढोत्तरी हुई। जिसका प्रतिषत 72.97 था, जिसमें से ग्रामीण 71.52 प्रतिषत तथा शहरी 79.39 प्रतिषत हो गई। इस दषक में ग्रामीण क्षेत्र में काफी अधिक साक्षरता की दर बढ़ी। इसका मुख्य कारण क्षेत्र में स्कूलों का अधिक खुलना तथा लोगों में जागरूकता का होना है। ग्रामीण क्षेत्र की अपेक्षा शहरी क्षेत्र में साक्षरता का प्रतिषत अधिक है। इसका मुख्य कारण शहरों में सुविधा का अधिक होना है।

चौमू तहसील में सड़क परिवहन और शिक्षा विकास–

चौमू तहसील में वर्ष 2001 में जनसंख्या 326488 थी जो वर्तमान में बढ़कर 395009 हो गयी। जो कि तहसील में असमान रूप से वितरित है। जनसंख्या वृद्धि दर 1991 में 33.4 प्रतिषत, 2001 में 29.1 प्रतिषत और 2011 में 30.8 प्रतिषत रही है जिसमें भी उतरोत्तर बदलाव दृष्टिगत है। राष्ट्रीय राजमार्ग 11 चौमू में रीड़ की हड्ड़ी की भांति है जिस पर परिवहन दबाव अधिकाधिक बना रहता है। जिसमें सर्वाधिक परिवहन चौमू से जयपुर की ओर होता है वो भले ही दैनिक आवास प्रवास के रूप में हो या एक निष्चितकालीन प्रवास के रूप में हो।

राष्ट्रीय राजमार्ग 11 की महत्ता इस बात से ही ज्ञात हो जाती है कि पिछले एक दषक में चौमू में रहने वाले छात्र–छात्रा उच्च अध्ययन हेतु राजधानी जयपुर की ओर दैनिक आवागमन के जरिये आ रहे हैं जिसमें उनके निजी वाहन और पब्लिक यातायात साधन भी षामिल हैं। सडक परिवहन के विकास ने षिक्षा के स्तर को एक नई दिषा प्रदान की है। प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना ने प्राथमिक षिक्षा और उच्च प्राथमिक षिक्षा में बदलाव प्रेषित किये हैं। विषेषकर महिला छात्राओं को सड़क परिवहन का सहयोग प्राप्त हुआ है। परिवारजनों में षिक्षा के प्रति जागरूकता उत्पन्न हुई है। बालिकाओं में षिक्षा के प्रति जोष पैदा हुआ है। प्रतियोगी छात्र–छात्राऐं भी परिवहन सुविधाओं का लाभ प्राप्त करते हुये अच्छी षिक्षा को प्राप्त कर रहे हैं। इस प्रकार विषेषकर सड़क परिवहन विकास व सुविधाओं ने षिक्षा में विकास और बेहतर षिक्षण सुविधाओं को अध्ययन क्षेत्र में प्राप्त किया है।

सन्दर्भः

Aslam, M. 1986. Statistical Methods in Geographical Studies. Rajesh Publications, New Delhi.

Atkins (2010) Assessing Social and Distributional Impacts in Transport Scheme Appraisal. *http://webarchive.nationalarchives.gov.uk/+/http://www.dft.gov.uk/pgr/scienceresearch/social/socialdistributionalimpact/sdi3.pdf Last accessed 02.11.10*

Government of Rajasthan 2005-10. Budget Study and Budget at a Glance 2005-06 Directorate of Economic Statistics, Rajasthan, Jaipur.

Bhaduri, S. 1992. Transport and Regional Development- A case study of Road Transport of West Bengal. Concept Publishing Company, New Delhi.

Chhipa, O.P. 2004. Environmental and Socio-economic Impact of International Tourism in Rajasthan: A Study of Pushkar Valley. Proceedings of RGA XXXII conference, pp. 30-34.

Dalton, R., Garlick, J., Minshull, R. and Robinson, A. 1978. Networks in Geography. George Philip and Son Ltd, London.

Factor, R., Yair, G. and Mahalel, D. (2010), Who by Accident? The Social Morphology of Car Accidents. Risk Analysis, 30: 1411–1423.

F. J. Amur and Roatray, J. K. 1992. Road Transport and Rural Development, Divison of Human Settlement. Asian Institute of Technology, Michigan, USA. pp. 88-92.